अथवा

'चीफ की दावत' कहानी आधुनिक सामाजिक मूल्यों में संक्रमंण से उपजी मानसिकता की कहानी है।' स्पष्ट कीजिए।

4. 'वारिस कहानी' के आधार पर 'मास्टर जी' का चरित्र-चित्रण कीजिए। (16)

अथवा

'वापसी कहानी' के कथ्य को उद्घाटित कीजिए। (10+10=20)

5. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए:

(क) 'जुम्मन शेख' का चरित्र-चित्रण

(ख) 'तीसरी कसम' कहानी की भाषा-शैली

(ग) 'दोपहर का भोजन' कहानी का सार

(घ) 'घुसपैठिए' कहानी का शिल्प

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 618 **G**

Unique Paper Code : 2052101103

Name of the Paper : Hindi Kahani (DSC-3)

Name of the Course : **B.A. (HONS.) Hindi**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

Ramanujan College Library, Kalkaji, New Delhi-110019

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं 'दो' की सप्रसंग व्याख्या कीजिए: (10+10=20)

(क) "राम-राम यह भी कोई लड़ाई है। दिन रात खंदकों में बैठे हड्डियां अकड़ गईं। लुधियाने से दस गुना जाड़ा। और मेह और बरफ ऊपर से। पिंडलियों तक कीचड़ में धंसे हुए हैं। गनीम कहीं दिखता नहीं, घंटे दो घंटे में कान के पर्दे फाड़ने वाले

धमाके के साथ सारी खंदक हिल जाती है और सौ-सौ गज धरती उछल पड़ती है। इस गैबी गोले से बचे तो कोई लड़े। नगरकोट का जलजला सुना था। यहाँ दिन में पच्चीस जलजले होते हैं। जो कहीं खंदक से बाहर साफ या कुहनी निकल गई तो चटाक से गोली लगती है। न मालूम बेईमान मिट्टी में लेटे हुए या घास की पत्तियों में छिपे रहते हैं।"

(ख) पत्र-संपादक अपनी शांति कुटी में बैठा हुआ कितनी धृष्टता और स्वतंत्रता के साथ अपनी प्रबल लेखनी से मंत्रिमंडल पर आक्रमण करता है। परन्तु ऐसे अवसर आते हैं, जब वह स्वयं मंत्रिमंडल में सम्मिल्नित होता है। मंडल के भवन में पग धरते ही उसकी लेखनी कितनी मर्मज्ञ, कितनी विचारशील, कितनी न्याय-परायण हो जाती है। इसका कारण उत्तरदायित्व का ज्ञान हैद्य नवयुवक युवावस्था में कितना उद्दण्ड रहता है। माता-पिता उसकी ओर से कितने चिंतित रहते हैं। वे उसे कुल-कलंक समझते हैं; परन्तु थोड़े ही समय में परिवार का बोझ सिर पर पड़ते ही वह अव्यवस्थित- चित्त उन्मत्त युवक कितना धैर्यशील, कैसा शांतचित्त हो जाता है। यह भी उत्तरदायित्व के ज्ञान का फल है।'

(ग) शामनाथ सिगरेट मुहं में रखे सिकुड़ी आँखों से श्रीमती के चेहरे की ओर देखते हुए पत्र-भर सोचते रहे, फिर सिर हिलाकर बोले, "नहीं मैं नहीं चाहता कि उस बुढियां का यहाँ आना-जाना फिर

से शुरू हो। पहले ही बड़ी मुश्किल से बंद किया था। माँ से कहें कि जल्दी से खाना खा के शाम को अपनी कोठरी में चली जाएँ। मेहमान कहीं आठ बजे आएँगे, इससे पहले ही अपने काम से निबट लें।

(घ) रमेश चौधरी से फोन पर यह समाचार पाकर राकेश भी गहरे अवसाद से भर गया था। उसे विश्वास ही नहीं हों रहा था कि इतनी कुशाग्र बुद्धि का सोनकर आत्महत्या कर सकता है। फोन पर रमेश की आक्रोशित आवाज सुन कर राकेश की उलझने और ज्यादा बढ़ गई थी। उसके काँपते हाथ में थमा फोन भी थरथरा गया था। बहुत मुश्किल से राकेश फोन क्रेडिल पर रख पाया था... राकेश ने स्वयं को संभालने का प्रयास किया। फिर भी उसे लग रहा था जैसे उसका हृदय डूब रहा है। वह धम्म से कुर्सी में धंस गया। उसके मुहं से अस्फुट शब्द निकले, "सोनकर यह क्यों किया तुमने...!"

2. कहानी के तत्वों के आधार पर 'उसने कहा था' कहानी का विश्लेषण कीजिए। (17)

अथवा

'पंच-परमेश्वर' कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिए।

3. 'तीसरी कसम' कहानी में निहित मूल संवेदना की विवेचना कीजिए। (17)